

९९. परगुणग्रहणाख्यानम्

नमस्कृत्य जिनं देवं सुरासुरसमर्चितम्। वक्ष्येहं परजन्तूनां गुणग्रहणसत्कथाम् ॥१॥
 धर्मानुरागतः स्वर्गे सौधर्मेण च धीमता। प्रोक्तं स्वस्य सभामध्ये कुर्वता गुणिनां कथाम् ॥२॥
 यस्त्यक्त्वा परदोषौघान्स्वल्पं चान्यगुणं मुदा। सुधीर्विस्तारयत्युच्चैरुत्तमः स जगत्त्रये ॥३॥
 तत्समाकर्ण्य चैकेन पृष्ठः स तु सुधाशिना। किं कोपि विद्यते देव तथाभूतस्तु भूतले ॥४॥
 सौधर्मेन्द्रस्ततः प्राह द्वारावत्यां गुणोज्ज्वलः। वासुदेवोन्तिमोप्यस्ति कृष्णनामा महाप्रभुः ॥५॥
 ततः स वेगतो देवः समागत्य महीतलम्। श्रीमन्नेमिजिनाधीशवन्दनार्थं प्रगच्छतः ॥६॥
 तस्य त्रिखण्डभूपस्य परीक्षार्थं स्वमायया। मार्गे दुर्गन्धताक्रान्तं मृतकुक्कुररूपकम् ॥७॥
 धृत्वा स्थितस्तदङ्गोत्थमहादुर्गन्धतो द्रुतम्। सर्वसेनाजनो नष्टस्तदा सोपि सुरः पुनः ॥८॥
 द्वितीयविप्ररूपेण समागत्य प्रपञ्चतः। वासुदेवाग्रतश्चक्रे कुक्कुरस्थप्रदूषणम् ॥९॥
 तदा श्रीवासुदेवेन प्रोक्तं भो कुक्कुरानने। कीदृशी स्फटिकाकारा दृश्यते दन्तसन्ततिः ॥१०॥

९९. दूसरों के गुण ग्रहण करने की कथा

जिन्हें स्वर्ग के देव पूजते हैं उन जिन भगवान् को नमस्कार कर दूसरों के दोषों को न देखकर गुण ग्रहण करने वाले की कथा लिखी जाती है ॥१॥

एक दिन सौधर्म स्वर्ग का इन्द्र धर्म-प्रेम के वश हो गुणवान् पुरुषों की अपने सभा में प्रशंसा कर रहा था। उस समय उसने कहा-जिस पुरुष का जिस महात्मा का हृदय इतना उदार है कि वह दूसरों के बहुत से औगुणों पर बिल्कुल ध्यान न देकर उसमें रहने वाले गुणों के थोड़े भी हिस्से को खूब बढ़ाने का यत्न करता है, जिसका ध्यान सिर्फ गुणों के ग्रहण करने की ओर है वह पुरुष, वह महात्मा संसार में सबसे श्रेष्ठ है, उसी का जन्म भी सफल है। इन्द्र के मुँह से इस प्रकार दूसरों की प्रशंसा सुन एक मौजी ले देव ने उससे पूछा-देवराज, जैसा इस समय आपने गुणग्राहक पुरुष की प्रशंसा की है, क्या ऐसा कोई बड़भागी पृथ्वी पर है। इन्द्र ने उत्तर में कहा-हाँ हैं और वे अन्तिम वासुदेव द्वारका के स्वामी श्रीकृष्ण। सुनकर वह देव उसी समय पृथ्वी पर आया। इस समय श्रीकृष्ण नेमिनाथ भगवान् के दर्शनार्थ जा रहे थे। उनकी परीक्षा के लिए यह मरे कुत्ते का रूप ले रास्ते में पड़ गया। उसके शरीर से बड़ी ही दुर्गन्ध भभक रही थी। आने-जाने वालों के लिए इधर-उधर होकर आना-जाना मुश्किल हो गया था। उसकी उस असह्य दुर्गन्ध के मारे श्रीकृष्ण के साथी सब भाग खड़े हुए। उसी समय वह देव एक दूसरे ब्राह्मण का रूप लेकर श्रीकृष्ण के पास आया और उस कुत्ते की बुराई करने लगा, उसके दोष दिखाने लगा। श्रीकृष्ण ने उसकी सब बातें सुन-सुनाकर कहा-अहा! देखिये, इस कुत्ते के दाँतों की श्रेणी स्फटिक के समान कितनी निर्मल और सुन्दर है। श्रीकृष्ण ने कुत्ते के और दोषों पर उसकी दुर्गन्ध आदि पर कुछ ध्यान न देकर उसके दाँतों की, उसमें रहने वाले थोड़े से भी अच्छे भाग की उल्टी प्रशंसा ही की। श्रीकृष्ण की पशु के लिए

तच्छ्रुत्वा मानसे तुष्टो भूत्वासौ प्रकटः सुरः। प्रोक्त्वा सर्वं तमभ्यर्च्य त्रिखण्डेशं दिवं गतः ॥११॥

एवं सुभयैर्जिनभक्तियुक्तैस्त्यक्त्वात्र दोषान्परलोकजातान्।

नित्यं तु साधुप्रगुणो हि भक्त्या ग्राह्यो गुणज्ञैर्वरशर्मसिद्धयै ॥१२॥

इति कथाकोशे परगुणग्रहणाख्यानं समाप्तम्।

१००. दुर्लभमानवपर्यायदृष्टान्ताः

विशुद्धं केवलज्ञानं नत्वा श्रीमज्जिनेश्वरम्। दृष्टान्तैर्दशभिर्विचित्रं मनुष्यत्वं सुदुर्लभम् ॥१॥

यथा—

चोल्लय पासय धणं जूवा रदणाणि सुमिण चक्कं वा। कुम्मं जुग परमाणु दस दिट्ठंता मणुयलभे ॥

पूर्वं चोल्लकदृष्टान्तं शृण्वन्तु सुधियो जनाः। श्रीमन्नेमिजिनाधीशे मुक्तिप्राप्ते जगद्धिते ॥२॥

विनीतविषयेऽयोध्यां नगर्यां ब्रह्मदत्तवाक्। षट्खण्डाधिपतिर्जाताश्चक्रिणामन्तिमो महान् ॥३॥

सहस्रभटनामाभूत्तत्सामन्तो गुणोज्ज्वलः। तस्य कान्ता सुमित्राख्या वसुदेवस्तयोः सुतः ॥४॥

मृते तस्मिन्सहस्रादिभटे सामन्तके ततः। वसुदेवः सुतः सोपि मूर्खः सेवादिकर्मसु ॥५॥

इतनी उदार बुद्धि देखकर वह देव बहुत खुश हुआ। उसने फिर प्रत्यक्ष होकर सब हाल श्रीकृष्ण से कहा—और उचित आदर मान करके आप अपने स्थान चला गया ॥२-११॥

इसी तरह अन्य जिन भगवान् के भक्त भव्यजनों को भी उचित है कि वे दूसरों के दोषों को छोड़कर सुख की प्राप्ति के लिए प्रेम के साथ उनके गुणों को ग्रहण करने का यत्न करें। इसी से वे गुणज्ञ और प्रशंसा के पात्र कहे जा सकेंगे ॥१२॥

१००. मनुष्य-जन्म की दुर्लभता के दस दृष्टान्त

अतिशय निर्मल केवलज्ञान के धारक जिनेन्द्र भगवान् को नमस्कार कर मनुष्य जन्म का मिलना कितना कठिन है, इस बात को दस दृष्टान्तों—उदाहरणों द्वारा खुलासा समझाया जाता है ॥१॥

१. चोल्लक, २. पासा, ३. धान्य, ४. जुआ, ५. रत्न, ६. स्वप्न, ७. चक्र, ८. कछुआ, ९. युग और १०. परमाणु।

अब पहले ही चोल्लक दृष्टान्त लिखा जाता है, उसे आप ध्यान से सुनें।

१. चोल्लक

संसार के हितकर्ता नेमिनाथ भगवान् को निर्वाण गए बाद अयोध्या में ब्रह्मदत्त बारहवें चक्रवर्ती हुए। उनके एक वीर सामन्त का नाम सहस्रभट था। सहस्रभट की स्त्री सुमित्रा के सन्तान में एक लड़का था। उसका नाम वसुदेव था। वसुदेव न तो कुछ पढ़ा-लिखा था और न राज-सेवा वगैरह की उसमें योग्यता थी। इसलिए अपने पिता की मृत्यु के बाद उनकी जगह इसे न मिल सकी, जो कि एक अच्छी प्रतिष्ठित जगह थी और यह सच है कि बिना कुछ योग्यता प्राप्त किए राज-सेवा